अतिथि संपादक की कलम से...

कत्लख़ाना नहीं कारखाना खोलिये

हिन्दू संस्कृति और शाकाहार की पक्षधर सभी को यह ख़बर चौंकाने वाली है कि देश में पंजीकृत बूचड़खानों की संख्या : मिल्क प्रोसेसिंग फैक्ट्रियों और लिक्विड मिल्क प्लांटो की सम्मलित संख्या से 7 गुना ज्यादा है एक आर.टी.आई. के जवाब के अनुसार देश में 1623 पंजीकृत बूचड़खाने (अवैध तो अनगिनत है) जबकि रजिस्टर्ड मिल्क प्रोसेसिंग यूनिटों की संख्या सिर्फ 213 है।

दूध, दही की नदियों के लिये प्रसिद्ध इस देश मे दुधमुंहे बच्चे दूध की दो बूंद को तरसते है, यहां पेट्रोल, डीजल की कीमतों पर तो बहुत हाय तौबा मचता है लेकिन गोधन की कमी से दूध के बढ़ते दामों के बारे में हम चुप ही रहते है।

श्वेत क्रांति (दूध) नहीं यहां गुलाबी क्रांति (मांस) को प्रश्रय मिल रहा है।

जब मुगल इस देश में आये तो उन्होंने भारत की धार्मिक मान्यताओं से जुड़े सभी मिथकों को नष्ट नहीं किया। वे मांसाहारी थे लेकिन गौमांस नहीं खाते थे, बाबर, हुमायूँ, अकबर, औरंगजेब, हैदर अली सभी ने गौहत्या पर प्रतिबंध लगाया था।

गाय की पूजा और पवित्र प्राणी मानने वाले इस देश में अंग्रेजों के आने के बाद गौमांस खाने प्रचलन बढ़ा। सबसे पहला कत्लख़ाना कलकत्ता में रार्बट क्लाइव ने खोला फिर मुम्बई, केरल और तमिलनाडु में खोले गये। अंग्रेजों ने 250 सालों के शासनकाल में 350 कत्लख़ाने खोले। अंग्रेजों ने जहां जहां (आर्मी केन्ट) सैनिक छावनी खोली वहां कत्लख़ाने और वैश्याघर (रेड लाइट एरिया) भी खोले।

सन् 1920 में लंदन की यूनीलीवर की शाखा लीवर ब्रदर्स बहुराष्ट्रीय कंपनी का भारत में पर्दापण हुआ उसने गाय की चर्बी मिश्रित डालडा ब्रांड वनस्पति स्थापित किया। साथ ही क्लोनाल्ड कंपनी ने हैम्बर्गर बनाने का कारखाना स्थापित किया, ये ब्रेकफास्ट फूड नवजात बछड़े के मांस से निर्मित

होता है। भारत के 10 राज्य है जहां गोवंश, भैंस इत्यादि के वध पर कोई प्रतिबंध नहीं है 18 राज्यों में गोहत्या पर पूरी या आंशिक रोक है। महाराष्ट्र में 316, यूपी में 285, आंध्रप्रदेश में 183, तमिलनाडु में 130, कर्नाटका में 36, पंजाब में 91, मध्यप्रदेश में 79, छत्तीसगढ़ में 74, केरल में 55, उड़ीसा में 51 कत्लख़ाने है। देश का सबसे बड़ा कत्लख़ाना देवनार, महाराष्ट्र में है। जब से कत्लख़ाने खुले है तभी से हिन्दू मुस्लिम विवाद शुरु हो गये है, इसके पीछे अग्रेंजों की राजनीति थी, उनकी साजिश थी क्योंकि उन्हें गोमांस खाना था।

सन् 1894 में ब्रिटेन की महारानी विक्टोरिया ने एक पत्र भारत में रह रहे अंग्रेज अफसर के नाम प्रेषित किया कि भारत में जितने भी बूचड़खाने है वह हिन्दूओं को पसंद नहीं है, तो तुम ऐसा करो कि स्लाटर हाउस में उन हिन्दूओं को हटाकर मुसलमानों को भर्ती करो और हिन्दूओं को बताओं की मुसलमान तुम्हारी गाय माता को काट रहे है।

इन कत्लख़ानों में गायों को बड़ी बेदर्दी से मारा जाता है जहां 10 गायों को ले जाने का स्थान है वहां 200 गाय भरी जाती है। 4 से 5 दिन तक भूखा रखा जाता है फिर गाय की आंखे फोड़कर व टांग तोड़कर सिद्ध किया जाता है कि वे काम की नहीं है। फिर 100 डिग्री के तापमान का खोलता पानी गाय पर डालकर उनकी चर्बी उतारते है क्योंकि जिंदा गाय की चर्बी पतली उतरती है जिससे सुंदर बैग, जाकेट, सेंडल बनायी जाती है। लकड़ियां जलाकर उनकी हड्डियों में से चर्बी निकाली जाती है, जिससे हवा पूरी तरह जहरीली हो रही है। बूचड़खानों के आस पास पानी के स्रोतों में मांस के लोथडों को कुत्ते नोंचते है, चील व गिद्ध आसपास उड़ते रहते है। इन बूचड़खानों में दुधारु और गर्भवती पशु भी काटे जा रहे है।

हम देश के जीवदया प्रेमी इन्कम टैक्स, सेल्स टैक्स के माध्यम से करोड़ों रुपये टैक्स सरकार को दे रहे है। परन्तु सरकार हमारे इन्हीं पैसों से कत्लख़ाने खोलने वालों के लिए सब्सिडि के रुप में हमारे टैक्स का पैसा दे रही है जबकि गौशाला खोलने के लिए संस्थाओं या व्यक्तिगत सब्सिडी का कोई प्रावधान अभी तक नहीं है, ऐसा क्यो ? हमें इस पर विचार कर विरोध करना होगा।

भारत छोड़ने से पहले माउन्टवेटन ने 1946 के दिसम्बर में गांधीजी से भेंट कर पूछा अब तो आप लोगों का राज रहेगा, आप सबसे पहला काम क्या करेंगे, गांधीजी ने कहा - ''सबसे पहले मैं कत्लख़ाने बंद कराऊंगा''। भारत की आजादी हम बाद में ले लेंगे, लेकिन गत सरकारों ने लगातार बूचड़खाने खोले और मांस निर्यात किया। उन्हीं गांधीजी को पूजने वाली म.प्र. सरकार बूचड़खाने के लिए जगह ढूंढ़ रही है जहां लगभग 1200 पशु प्रतिदिन काटे जाने का प्रस्ताव है।

हम सबको एक स्वर में कहना होगा कि हमें कत्लख़ाना नहीं कारखाना चाहिये। हमारे पैसों से आप - 1) पशु चिकित्सालय खोलिये 2) अच्छी नस्ल के सांड पालिये जिससे प्राकृतिक गर्भाधान हो। 3) गौशाला खुलवाइये। 4) दूध डेयरी खोलिये जिनसे दूध की कमी ना हो। 5) ट्रेनिंग सेंटर खोलिये। 6) गौ एम्बुलेंस चलवाईये। 7) गोबर गैस प्लांट लगाकर मिथेन गैस का उपयोग कराईये।

परन्तु अब हम भारत से गौमांस का निर्यात नहीं करने देंगे। निर्यात करना ही है तो, दया-प्रेम-करुणा का करो। हम टैक्स जीवदया के लिये देते है कत्लख़ानों के लिए नहीं। हमें मांस निर्यात कर उस पैसे से भारत का तथाकथित विकास नहीं चाहिये। - **श्रीमती साधना जैन,** आकाशवाणी, भोपाल

भौतिकता को छोड़...

एकता से दीवार और दीवार की एकता से घर व महल बनते है वैसे ही हमें एक होना होगा तभी समाज सशक्त होगा।

आयोजन में प्रदेश के राजस्व मंत्री श्री जयंत मलैयाजी की धर्मपत्नी श्रीमती सुधा मलैया, निगम सभापति श्री अजय नरुका व चातुर्मास समिति के प्रमुख संयोजक श्री सचिन जैन व पार्षद श्रीमती आशा सोनी के साथ समाज के वरिष्ठ सदस्य उपस्थित थे। रैली बहुत ही अनुशासित तरह से निकली।

गोलालारीय समाज की क्षमावाणी प्रतिवर्षानुसार न्यास भवन पर हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया। सर्वप्रथम मंगलचरण कर तत्पश्चात 5 से अधिक तप साधना करने वाले श्रावको का सम्मान किया गया तदुपरांत प्रतिभाशाली विद्यार्थियों का सम्मान समारोह कार्यक्रम का विशेष आकर्षण रहा। इस कार्यक्रम के माध्यम से प्रतिवर्ष अपनी अपनी कक्षाओं में श्रेष्ठ रहे बच्चों को समाज की ओर से पुरस्कृत किया जाता है। गोलालारीय दर्शन की ओर से सभी को प्रशस्ति पत्र प्रदान किये गए एवं गोलालारीय समाज न्यास की ओर से प्रथम, द्वितीय एवं सांत्वना पुरस्कार दिए गए। इस कड़ी में कक्षा 12 वीं में गणित संकाय से उदित जैन(एम.पी.बोर्ड), अनिमेष जैन(सी बी एस ई) और वाणिज्य संकाय से काजल जैन को प्रथम पुरस्कार दिए गए। कक्षा 10 वीं में सीबीएसई बोर्ड से 10 सीजीपीए प्राप्त करने वाले बच्चों में अमीषा जैन, अर्पिता जैन एवं संस्कार जैन को प्रथम, संचिता जैन को द्वितीय एवं सुहानी जैन को सांत्वना पुरस्कार दिए गए। प्रतिभा सम्मान कार्यक्रम का संचालन श्रीमति अनुपमा जैन ने किया।

सचिव बाहुबली ने समाज के गतवर्ष व आगामी कार्यक्रमों का विवरण दिया समाज का आगामी स्नेह सम्मेलन दिसम्बर-जनवरी 2017 में होना प्रस्तावित है जिसमें बुजुर्ग सम्मान, प्रतिभाशाली सम्मान व सांस्कृतिक कार्यक्रमों का समावेश किया जावेगा। ब्र. अभय भैयाजी नें अपनें संक्षिप्त उद्बोधन में क्षमा धर्म का महत्व समझाते हुए कहा कि गलती होनें पर तत्काल ही क्षमा याचना कर लेना चाहिए परंतु बात बंद नही करना चाहिए। बात बंद करने से सुलह के सभी रास्ते बंद होते है। लॉर्ड आदिनाथ कालोनी में कुम्हेडी में समाज द्वारा नवीन मंदिर का निर्माण किया जाना है। जिसके निर्माण हेतु समाज जनों ने बढचढकर सहयोग देने की घोषणा की। मंदिरजी का बाहरी नक्शा (ऐलीवेशन) समाज जनों को दिखाया गया। प्रतिभाशाली बच्चों का सम्मान श्री खेमचंदजी की स्मृति में उनकी पुत्री विजया-अजय जैन, ललितपुर द्वारा प्रदान किया गया। कार्यक्रम का संचालन श्री सुधेश जैन ने किया व आभार वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री अशोक कुमारजी जैन ने माना।